शोध मंथन, 2018 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 5.463 (SJIF)
UGC Approved Journal No. 40908

चित्रकार फ्रीड़ा काहलो– 'वेदना की मल्लिका'

डॉ0 कविता सिंह
सहा0 प्रोफ़े0, (स्टेज–III), सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ़ फॉइन आर्ट,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला

सारांश

इस शोधपत्र में मैक्सिकन स्त्री चित्रकार 'फ्रीड़ा काहलो' के जीवन व चित्रों का वर्णन तथा सूक्ष्म विश्लेषण है जो 1907 में जन्मी तथा जिन्होंने विश्व भर में नाम कमाते हुए कला के इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिख डाला जो आज कल की स्त्री कलाकारों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बनी रहेंगी। उनका अपना जीवन शारीरिक तथा मानसिक पीड़ाओं, दुखों व वेदनाओं से ओत–प्रोत था इसके बावजूद उन्होंने अविस्मरणीय तथा भावपूर्ण उच्चस्तरीय चित्रों की सृजना की।

मूल शब्द– *फ्रीड़ा काहलो, लूव्र, मेक्सिको, गिलर्मो काहलो, फर्नान्डो फर्नान्डेज़, प्लास्टर कॉर्सेट, डिएगो रिवेरा, मैज़ोनाईट, स्टिल–लाइफ, आत्म–चित्र, अतियथार्थवाद।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:
डॉ0 कविता सिंह

चित्रकार फ्रीड़ा काहलो– 'वेदना की मल्लिका'

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 117–121

Article No. 17
http://anubooks.com
?page_id=581

डॉ0 कविता सिंह

प्रस्तावना

क्या कोई मानव यह कल्पना कर सकता है कि जिस मैक्सिकन स्त्री कलाकार की अमूल्य कलाकृति प्रांस के सुप्रसिद्ध कला संग्रहालय–**'लूव्र'** ने ऊँचे दामों में खरीदी हो तथा वह अपने देश मेक्सिको की सबसे पहली तथा संवेदनशील स्त्री कलाकार हो का जीवन इतने संघर्ष से गुज़रा हो सकता है। बचपन से ही **'फ्रीड़ा काहलो' (1)** के जीवन में उतार चढ़ाव आते रहे जिसमें उन्होंने मानसिक व शारीरिक पीड़ा व यातनाएँ सही तथा दुःख, अत्याचार, विश्वासघात व दर्द के असीम समुंदर में एक छोटी सी कमज़ोर नाव की तरह वह तैरती रही तथा थपेड़े खाती रही अनगिनत तूफ़ानों को झेलते हुए। उनकी मानसिक व मानवीय शक्ति को पूरा विश्व आज सलाम करता है। चित्रकार फ्रीड़ा काहलो का जन्म 1907 में मेक्सिको के एक छोटे से गाँव **'कोयाकैन'** में हुआ।[1] उनके पिता **'गिलर्मो काहलो'** जर्मन–मैक्सिकन फोटोग्राफर थे। हर बच्चे की तरह फ्रीड़ा के मन में भी उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त करके डॉक्अर बनने का रूझान था। उन्होंने यह कभी नहीं सोचा था कि वह एक दिन विश्व विख्यात चित्रकार के रूप में उभरेंगी जिनकी एक–एक अमूल्य कलाकृति मानव की वेदनाओं का बखान करती हो तथा दुःख व पीड़ा से ग्रस्त इस विश्व में हो रही अनेक असमानताओं, शोषण, युद्ध से हो रहा विनाश, अमीरी–गरीबी के बढ़ते फ़ासले, भुखमरी, अज्ञानता तथा नारी पर बर्बर यातनाओं को दिखाने वाला सच्चा दर्पण होगा। हर श्रोता इनके चित्रों को देख कर सोचने पर मज़बूर हो जाता है।

छह वर्ष की आयु में फ्रीड़ा काहलो पोलियो रोग से ग्रस्त हो गई[2] तथा इस से वह अभी उभरी भी ना थी की 18 वर्ष की आयु में उनकी एक भयानक सड़क दुर्घटना के कारण ताँगें, हँसुली की हड्डी तथा पसलियाँ कई स्थानों से टूट गई।[3] वह बच तो गई पर उनका डाक्टर बनने का सपना चकनाचूर हो गया। काफ़ी समय तक उन्हें बिस्तर पर प्लास्टर कॉर्सेट पहन कर लेटे रहना पड़ा। पर विधाता को क्या मालूम था कि फ्रीड़ा काहलो किस हाड़–मास की बनीं हैं। वह बिस्तर पर पड़े –पड़े ही अपने रेखा–चित्र व तैल्य –चित्र बनाती रही। उनके पिता के एक मित्र–**'फर्नान्डो फर्नान्डेज़'** प्रसिद्ध प्रिंटमेकर थे तथा उन्होंने ही पहली बार फ्रीड़ा काहलो में चित्रकार बनने की क्षमता महसूस की थी।[4] कुछ ही समय के पश्चात इस कलाकार की देख–रेख में फ्रीड़ा सचमुच ही एक अच्छी कलाकार बन गई क्योंकि बचपन से ही डॉक्टर बनने के सपने लिए वह मानवीय शरीर के अंदरूनी अंगों, हड्डियों व मांसपेशियों का चित्रण बाखूबी से करती रहीं थी। उनकी यह महीन शैली उनके द्वारा बाद में उकेरे गए चित्रों में विद्यमान है किन्तु उनके मायने अलग हैं।[5]

फ्रीड़ा काहलो एक आकर्षक व सुंदर व्यक्तित्व की मालिक थी तथा हर कोई उनकी छवि की ओर खिंचा चला आता। इसी दौरान उनकी मुलाकात विश्व विख्यात मैक्सिकन चित्रकार व मूर्तिकार–**'डिएगो रिवेरा' (2)** से हुई जो लम्बे–चौड़े दिल–दौल के मालिक थे तथा कला जगत में उनका ढंका बज रहा था। दोंनो ने शादी के बंधन में बंधने का निश्चय किया परंतु उनका विवाहित जीवन आरंभ से ही ऊबड़–खाबड़ काँटों भरी राहों पर रेंगने लगा क्योंकि डिएगो को अपनी कला व ख्याति पर बहुत अभिमान था वह दूसरे किसी कलाकार को सहन करने में असमर्थ था। आपस में नित दिन उनका मानसिक टकराव होता रहा जिसने दोनों के जीवन में कड़वाहट घोल दी।

डिएगो के व्यक्तित्व में बेवफ़ाई व विश्वासघात एक सामान्य बात थी। फ्रीड़ा काहलो प्रशंसा की पात्र हैं कि किस तरह उन्होंने अपने दुःख भरे दाम्पत्य जीवन व शारीरिक कठिनाईयों के बावजूद अपना पूरा जीवन अपनी कला को निखारनें में समर्पित कर दिया। दूसरी ओर उनके पति का व्यवहार उनकी ओर उदासीनता से भर रहा था उन दोनों का तलाक हो गया पर डिएगो 'फ्रीड़ा काहलो' की चुंबकीय छवि से बहुत दिन दूर न रह सकता तथा दोनों ने फिर पुनर्विवाह कर लिया। यह उनकी प्यार और घृणा की अजीब दास्तान है।

फ्रीड़ा काहलो के चित्र अत्यंत ही भावपूर्ण तथा दिल की गहराईयों में बस जाने की क्षमता रखते हैं। उनके प्रमुख चित्रों में अक्सर हम उनके स्वंय के आत्म–चित्र पाते हैं जिनमें वह विभिन्न स्थितियों, आकृतियों, जानवरों तथा बहुत बार कई प्रकार के पेड़ –पौधों व जीवनों के बीच सुमगन पाते हैं। यह सब तत्व उनके चित्रों में विचित्र कथाओं, मानसिक वेदनाओं, यातनाओं तथा पीड़ा को उभार कर कैनवास पर बिखेरते हैं। उन्होंने बहुत से चित्र कैनवास की बजाए मैज़ोनाईट, मैटल शीट, शीशा, प्लाई बोर्ड, तथा लकड़ी के सतहों पर बनाए जो अपने आप में अनूठी शैली रखते हैं। अक्सर वह तैल्य रंगों व वॉटरकलर का उपयोग करते, कई प्रकार की परतों व खुरदरेपन को बाखूबी से उभारते हुए साधारण दिखने वाले चित्रों में भी सूक्ष्म जान डाल देती थीं। उनके चित्रों में हम यह पाते हैं कि हर चिन्ह को उन्होनें एक अलग भाव को दरसाने में उपयोग किया है जैंसे मन व शारीरिक पीड़ा को उन्होंने कैक्टस व सूखे पत्तों से जोड़ कर देखा तथा बहुत बार मानव खोपड़ी, पिंजर, हड्डियों तथा पसलियों को भी कई पेंटिग्स में मौत के सोदागर की तरह उकेरा क्योंकि दिन–प्रतिदिन उनका सामना जीवन व मृत्यु की निरंतर लुका–छिपी से हो रहा था।

फ्रीड़ा ने बहुत से **'स्टिल लाइफ़' (3)** चित्र अजीब ढंग से बनाए जिनमें अद्भुत प्रकार के जीव–जन्तु, पक्षी, फल, चाकू , बनमानुष, पुस्तके, मानव खोपड़ियाँ, खिलौने तथा संगीत के साज़ देखे जा सकते हैं जो उनकी आत्मा व सोच को किसी न किसी चिन्ह से जोड़कर उनके मन–मस्तिष्क में तैरती आशंकाओं, चिन्ताओं तथा आशाओं का आभास कराते हैं।[6]

उनके कुछ चित्र तो अत्यंत ही दुःख भरे हैं जैसे की **'ब्रोकन कॉलम' (4)** नामक आत्म–चित्र जो उन्होंने 1944 में बनाया था। इस चित्र में उन्होंने समुंदर किनारे खड़ी होकर अपनी टूटी हुई रीड़ की हड्डी को मज़बूत 'कॉर्सेट' में जकड़ रखा है। इस आधे नग्न धड़ के बीचो–बीच एक टूटा हुआ स्तंभी दिखाई देता है तथा उनके अंगों व चेहरे पर अनेक कील गड़े हुए हैं। चेहरे पर उदासी है बाल बिखरे हुए हैं तथा दोनों आँखों से आँसूओं की वर्षा हो रही हैं।

'द टू फ्रीडाज़' (5) नामक चित्र जोकि फ्रीड़ा काहलो ने 1949 में बनाया था उसमें उन्होंने अपनी दो छवियाँ हाथ में हाथ लिए बैठीं दिखाई हैं। दोनों में वस्त्र विशेष विभिन्नता है तथा दोनों के दिल उनकी स्तनों से बाहर झूल रहें है जिनकी रक्त की नसें आपस में जुड़ी हैं। एक नस को फ्रीड़ा ने कैंची से काट रखा है तथा उनके सफ़ेद स्कर्ट पर खून बह रहा है और नीचे बहुत से लाल रंग के फूल खिले हुए हैं, आसमान में घने काले बादल छाए हुए हैं।

फ्रीड़ा काहलो के चित्र मैक्सिकन लोक कला तथा कैथोलिक पौराणिक कथाओं से प्रेरित है। उनके एक चित्र में मेक्सिको के जंगल व वनस्पति में विचरते काले रंग के जंगली बिल्ले, बनमानुष, तितलियाँ तथा उनके गले को जकड़ते लाल रंग के सूखे कॉटे जिसमें हमिंग बर्ड़ फंसे

हुए मिलते हैं। इस चित्र का शीर्षक **'सेल्फपोर्ट्रट विद थॉर्न नेक्लस एण्ड हमिंग बर्ड' (6)** है जोकि फ्रीड़ा काहलो ने 1940 में तैल्य रंगों के साथ कैनवास पर बनाया था।

उनके चित्रों में हम अतियथार्थवाद की झलक महसूस करते हैं। एक अन्य चित्र जिसका शीर्षक **'मेमरी' (7)** है फ्रीड़ा ने 1937 में बनाया था। इसमें फ्रीड़ा समुंदर किनारे खड़ी हैं तथा उनके दोनों हाथ कटे हुए हैं। किनारे पर उन्होंने अपना दिल पड़ा हुआ दिखाया है जिसमे से रक्त बह कर लहरों में मिल रहा हैं। दो फ्रॉक एक धागे से आसमान से लटक रही हैं। एक फ्रॉक में से हाथ निकलता हुआ फ्रीड़ा काहलो की बाँह पकड़ रहा है। एक लम्बी सी छड़ी उनकी छाती से गुज़र रही है जिनके किनारों पर नन्हीं सी परियाँ बैठी हैं। आँखों से आँसूओं की लड़ी बह रही है तथा आसमान में घने बादल छाए हैं।

फ्रीड़ा के बहुत ही प्रसिद्ध चित्र **'द ड्रीम' (8)** में वह अपने बिस्तर पर सोई पड़ी हैं तथा उनके बिस्तर की छत पर एक कंकाल लेटा है जो बहुत सी गोलियों से छन्नी है। पीली चादर को जकड़ती काँटों भरी बेलों ने फ्रीड़ा के शरीर को ढाँप रखा है। इस स्वन्पमयी तथा डरावने चित्र में उनका लाल रंग का बिस्तर हवा में उड़ रहा है क्योंकि शारीरिक पीड़ा के कारण पल–पल फ्रीड़ा काहलो मौत की कल्पना से ग्रस्त थी।

शायद ही कोई और चित्रकार इस विश्व में दोबारा जन्म लेगी जिसके चित्रों में फ्रीड़ा काहलो जैसे अक्स, बिम्ब तथा चिन्ह देखने को मिलेंगे। छोटी सी आयु में ही उन्होंने अपना नाम कला जगत में सुनहरी अक्षरों में लिख डाला। फ्रीडा काहलो आने वाली कई स्त्री चित्रकारों के लिए प्रेरणा का प्रकाश–स्तंभ बनी रहेंगी।

संदर्भ

1. बुर्रुस, क्रिस्टीना ; 2008, *फ्रीड़ा काहलो : 'आई पेन्ट माई रियलिटी',* थेम्स एण्ड हड़सन, लंदन, पृष्ठ : **199**.
2. हेरेरा, हेड़न ; 2002, *फ्रीड़ा : अ बायोग्राफी ऑफ फ्रीड़ा काहलो,* हारपर पेरेनियल, न्यूयॉर्क, पृष्ठ : **10–20**
3. *वही,* पृष्ठ : **47–50**
4. अंकरी, गन्नित ; 2002, *इमेजिंग हरसेल्फ़ : फ्रीड़ा काहलो पोएटिक्स ऑफ आइडेन्टटी एण्ड फ्रैग्मन्टेशन,* ग्रीनवुड प्रेस, कैलिफोर्निया, पृष्ठ : **20**
5. हेरेरा, हेड़न ; 2002, *फ्रीड़ा : अ बायोग्राफी ऑफ फ्रीड़ा काहलो,* हारपर पेरेनियल, न्यूयॉर्क, पृष्ठ : **62–63**
6. मिलनर, फ्रैंक ; 1990, *फ्रीड़ा काहलो,* पी.आर.सी. पब्लिशिंग, लंदन, पृष्ठ : **72**

Plate no. 1

Plate no. 2

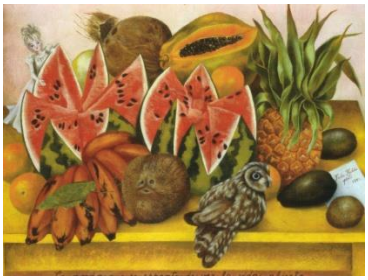

Plate no. 3

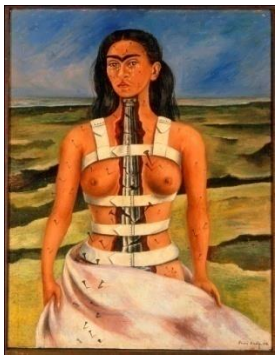

Plate no. 4

Plate no. 5

Plate no. 6

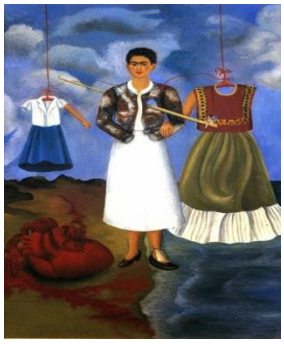

Plate no. 7

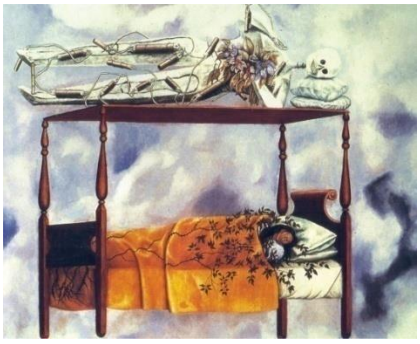

Plate no. 8